ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292RNI
REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 138-139**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

बुद्ध दर्शन में दुःख का कारण और निवारण

डॉ0 प्रहलाद जी

असि0 प्रोफेसर–प्रचीन इतिहास, किसान पी0जी0 कालेज रकसा–रतसर, बलिया (उ0प्र0) भारत

Received-20.11.2024, Revised-27.11.2024, Accepted-03.11.2024 **E-mail : pandeyprahlad126@gmail.com**

***सारांशः** वस्तुतः श्रेष्ठ जन ही इन सत्यों को समझ पाते हैं। संसार में दुःख ही दुःख है कहीं सुख नहीं, जो जितनी सुख की अभिलाषा करते हैं। उतनी ही घोर दुःख सागर में डूब जाता है, अतः सांसारिक सुखेच्छा से दुःख की निवृत्ति सम्भव नहीं है। इसलिए इसे सत्य कहा गया है। आर्यजनों के द्वारा अनुभव गम्य होने के कारण इन्हें आर्य सत्य कहा गया है।*

कुंजीभूत शब्द– बुद्ध दर्शन, निवारण, अभिलाषा, दुःख सागर, सांसारिक सुखेच्छा, दुःख की निवृत्ति, अनुभव गम्य, उपादान

आर्य सत्यों में प्रथत दुःख है। सांसारिक अनुभव के अनुसार, पृथ्वी पर दुःख की जड़ इतनी मजबूत है कि उसको अलपाय नहीं किया जा सकता है। दुःख के कारण को ही दुःख समुदाय कहते हैं। यह दुःख समुदाय ही द्वितीय आर्य सत्य है। क्यों दुःख होता है, इसके अनेक कारण हैं। उन कारणों की संख्या निश्चित नहीं की गई है। वस्तुतः कामनाओं की पूर्ति न होने पर भी दुःख होता है और संसार में कामनायें अनंत हैं। अतः दुख के कारण भी अनंत हैं। इसके 12 निदान बताये गये हैं।

(1) जरामरण	(2) जाति	(3) भव
(4) उपादान	(5) तृष्णा	(6) वेदना
(7) स्पर्श	(8) षडायन	(9) नाम रूप
(10) विज्ञान	(11) संस्कार	(12) अविद्या

उक्त दुःख कारणों में पूर्व कारण के प्रति पर कारण हैं, अर्थात् जमारण के कारण जाति है, अर्थात् जन्म लेना जाति कारण भव है। भव अर्थात् प्राणिमात्र के पुनर्भव या पुर्नजन्म उत्पन्न करने वाले कर्मः

यद् भविष्यद भव फलं कुरूतेकर्मतद् भावः

भव का कारण उपादन है। शीलोपादन (व्रतों में आसक्ति) और इनसे बढ़कर है आत्मोपादन। आत्मोपादन का तात्पर्य है आत्मा को नित्य मानने में आशक्ति। वाहयोयार्थनुभव के बिना तृष्णा की उत्पत्ति नही होती है। अतः वेदना तृष्णा की जननी है। विषयेन्द्रियों के सम्पर्क से वेदना की उत्पत्ति होती है। यह स्पर्शरूप सम्पर्क ममसहित पंचज्ञानेन्द्रियों के ऊपर आश्रित है जिन्हें षडायतन भी कहते हैं। यह नामरूप दृश्यमान शरीर तथा मन से संचालित संस्थान विशेष का कार्य करता है।

चिन्तधारा या चैतन्यमागर्भ से भ्रूण के नाम रूप का साधक है। यह विज्ञान संस्कार पूर्वजन्म के कर्म और अनुभव से उत्पन्न होता है, जो स्वयं अविद्या का कार्य है। सभी प्रकार के दुःख–पुन्जों का आदि कारण अविद्या या अज्ञान है। उक्त द्वादश दोनों के समूह को भव चक्र कहते हैं। भव चक्र का सम्बन्ध भूत, भविष्य और वर्तमान से है। इन्हीं द्वादश निदानों का दूसरा नाम प्रतीत्यसमुत्पाद है।

प्रतीत्यसमुत्पाद– अज्ञान अथवा अविद्या से संस्कार, संस्कार से विज्ञान, विज्ञान से नामरूप, नामरूप से षडायतन, षडायतन से विषय सम्पर्क, विषय सम्पर्क से अनुभूति, अनुभूति से तृष्णा, तृष्णा से उपादान, उपादान से भव, भव से जन्म, जन्म से जरा, भरण, शोक, रोना–पीटना, दुःख, मानसिक चिन्ता तथा उद्विग्नता उत्पन्न होती है। इस प्रकार इस सम्पूर्ण दुःख की उत्पत्ति होती है।

प्रतीत्यसमुत्पाद बुद्ध सम्मत कारण वाद है किसी वस्तु की उत्पत्ति अर्थात् सापेक्ष कारणतावाद ही प्रतीत्य समुत्पाद है। इसका प्रयोग व्यक्ति की स्थिति समझने के लिए किया जाता है। मानव की उत्पत्ति श्रृंखलाबद्ध होती है। उक्त बारह निदानों में अविद्या और संस्कार का साक्षात् सम्बन्ध अतीत जन्म से है। विज्ञान नामरूप षड़ायन स्पर्श वेदना तृष्णा उपादान और संस्कार का साक्षात् सम्बन्ध अतीत जन्म से है। विज्ञान नामरूप षडायतन स्पर्श वेदना तृष्णा उपादान और भव से वर्तमान जीवन से सम्बद्ध निदान है। जाति और जरा मरण भविष्य जीवन से सम्बद्ध निदान है।

वैराग्य और संस्कारों के निरोध के लिए अविद्या का निरोध आवश्यक है। विज्ञान का निरोध संस्कारों का निरोध करता है। विज्ञान के निरोध से नाम रूप का निरोध हो जाता है। स्पर्श के निरोध से वेदना का निरोध होता है। वेदना के निरोध से तृष्णा का निरोध, तृष्णा के निरोध से उपादान का निरोध, उपादान के निरोध से भव का निरोध, भव के निरोध से जन्म का निरोध, जन्म से जरा, मरण, शोक रोदन, दुःख व उर्द्विनता का निरोध होता है। ऐसा होने से सम्पूर्ण दुःख समूह का निरोध हो जाता है।

अविद्या में आकण्ठ डूबा हुआ प्राणी तृष्णा के बंधन में बंधकर आसक्त होने के कारण बार–बार जन्म लेना पड़ता है। लोभ द्वेष मोह के परिणाम तथा लोभ द्वेष मोह आदि के कारण किये गये कर्म को जहां उसका आस्तित्व बनता है वहीं विजाक बनता है। जहां कर्म का विपाक होता है वहीं उस कर्म परिपाक की अनुभूति होती है। भले ही वह इस जन्म में हो या किसी दूसरे जन्म में, अविद्या का नाश हो जाने से तृष्णा का निरोध हो जाता है। फलतः पुनः जन्म आदि की संभावना नहीं रहती है। अलोभ, अद्वेष, अमोह का परिणाम अलोभ,अद्वेष अमोह के कारण किया गया है। अलोभ आदि से उत्पन्न कर्म लोभादि विनष्ट हो जाने पर स्वयं नष्ट हो जाता है ऐसी स्थिति में उसके पुनरूत्पाद की कोई संभावना नहीं रहती है।

दुःख निरोध गामिनी प्रतियत् ही निर्वाण भाग है। बृद्ध ने सुख–समृद्धि के जीवन यापन करने वाले सुखभर्गियों तथा घोर व्रताचरण से इस कंचन काया को सुखाकर कांटा बना देने वाले तापसो के जीवन को निर्वाण के लिए सहायक न मानकर इन उभय

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

सुख तथा दुःख के छोरों को छोड़कर मध्यम प्रतिपाद को खोज निकाला। दुःख निरोध गामिनी प्रतिपाद को आर्य अष्टांगिक मार्ग भी कहते हैं।

बौद्ध धर्म दर्शन वास्तविक दृष्टि से एक अणुवादी,श्रमणवादी, गणवादी व व्यष्टिवादी दर्शन है। इसके अनुसार समष्टि तात्विक अपितु संवृत्तिमात्र सामान्य लक्षण मात्र, नाममात्र अतः भ्रन्तिमात्र है। इस प्रकार बौद्ध दृष्टि में समष्टि दृष्टि का मिथ्याव ही निष्पन्न होता है। बौद्ध संघ समष्टि चेतना का नहीं अपितु सामूहिक एकात्मिकता का परिचायक है।

बौद्ध की दृष्टि में यह जगत पूर्णतः दुःखमय है। सर्वदुःखम उनके अनुसार दुःखता के 3 प्रकार हैं– दुःखदुखता, संकर दुःखता और विपरिणाम दुःखता। जगत की एक विध दुःखता दुःख रूपता औपधिक अथवा नैमित्तिक नहीं है जो उपाधि अथवा निमित्त को दूर कर देने से दूर हो सके, दुःख रूप है। दुःखरूपता संसार का स्वरूप लक्षण है। संसारोत्छेद के बिना दुःखोच्छेद संभव नहीं है।

दुःखचेतना करूण महाकरूण को जन्म देती है। यह करूण श्रावक और प्रत्येक बुद्ध में सत्वावलम्बना होती है। दुःखग्रस्त प्राणियों के दर्शन से उत्पन्न होती है, जबकि सम्बुद्ध में वह वस्तु धर्मा होती है। वस्तुतः बुद्ध की दुःख दृष्टि आरम्भ में तो सत्वावलम्बना होती है किन्तु वह आगे चलकर वस्तुधर्मा होती है, अर्थात् बुद्ध का दुःख अन्ततः भौतिक और मानसिक न रहकर आध्यात्मिक हो जाती है। उनकी करूण की भी यही दशा है। यहां कहा जा सकता है कि यदि प्राणी दुःख से मुक्त हो जाये, वस्तुधर्मा दुःखता भी निवृत्त हो जायेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अभिधर्म कोष–वसन्धुकृत।
2. सौन्दरनन्द– अश्वघोषकृत।
3. भारतेतिवृन्तम्– डॉ0 नरेन्द्र कुमार तिवारी।
4. सौन्दरनन्द का साहित्यिक एवं दार्शनिक गवेषणा–डॉ ब्रजमोहन पाण्डेय।

*****